रहस्य संदेश

पृष्ठ : 4 मूल्य : 2.00 रुपये मात्र

एटा कासगंज अलीगढ़ लखनऊ गाजि

28 : 06 : 2026 | वर्ष 20 अंक 168 | RNI-No. UP

खेत बचाओ अभियान के तहत चला गांव में जागरूकता कार्यक्रम

कानपुर (अनवर अशरफ)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा खेत बचाओ अभियान के अंतर्गत ग्राम निगोहा विकासखंड चौबेपुर जनपद कानपुर नगर में कार्यक्रम करवाया गया। जिसमें केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि मृदा में जीवांश पदार्थ मिलने से किसानों की सेहत व मृदा में सुधार होगा। खेती में अंधाधुंध रासायनिक खादों का उपयोग से मिट्टी की सेहत व मानव सेहत पर असर पड़ रहा है।इसके लिए अपने खेतों में गर्मी के दिनों में हरी खादों जैसे ढैचा, सनई , उर्द एवं मूंग की फसल को लेकर उसके अवशेषों को उसी खेत में मिला दें।उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरूण कुमार सिंह ने कहा कि गर्मी की जुताई करने से खेत में कीट पतंगों एवं खरपतवारों की संख्या काफी कमी हो जाती हैं इस मौके पर खेत बचाओ अभियान में निगोहा गांव के सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र
उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड व नई दिल्ली से प्रकाशित
स्वतंत्र चेतना
कानपुर वर्ष 20 अंक 200
रविवार 28 जून 2026
पृष्ठ 12 महानगर संस्करण
MIC-II/CPM/004/KPHO/2022-24
₹ 3.00
www.swatantrachetnanews.com
गोरखपुर, लखनऊ, प्रयागराज, कानपुर, नई दिल्ली, हरिद्वार, वाराणसी, आजमगढ़ व अयोध्या से प्रकाशित
अक्षय की फिल्म वेलकम टू द जंगल की दमदार शुरुआत

सीएसए में अपशिष्ट प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

उत्तर प्रदेश की मा.राज्यपाल महोदया के निर्देश एवं कुलपति डॉ संजीव गुप्ता के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान बिभाग द्वारा अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. रश्मि सिंह, प्रभारी, संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग ने किया। उनके साथ विभाग की टीचिंग एसोसिएट सुश्री एलेना ताखेल्लाम्बम एवं डॉ. स्वप्निल सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए दैनिक जीवन में सतत अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सिंगल-यूज प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु सतत अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देना था। वक्ताओं ने बताया कि सिंगल-यूज प्लास्टिक जैव-अवक्रमणीय नहीं होती, जिसके कारण यह मानव स्वास्थ्य, वन्यजीवों तथा पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती है। यह भूमि, जल एवं मृदा प्रदूषण का प्रमुख कारण बनती है। प्रतिभागियों को प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए एकल-उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग घटाने, पुनः उपयोग योग्य एवं पर्यावरण-अनुकूल विकल्प अपनाने, स्रोत स्तर पर कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) तथा अपशिष्ट के वैज्ञानिक एवं जिम्मेदार निस्तारण के उपायों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में ह्ललैंडफिल के लिए पार्कों का विकास एक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण विषय पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

इस दौरान प्रतिभागियों को क्ले कैपिंग तथा फाइटोकैपिंग जैसी लैंडफिल कैपिंग तकनीकों से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि फाइटोकैपिंग, जिसमें वनस्पतियों एवं प्राकृतिक मृदा प्रणाली का उपयोग कर लैंडफिल को ढका जाता है, पारंपरिक क्ले कैपिंग की तुलना में अधिक टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल एवं किफायती तकनीक है। यह लैंडफिल से निकलने वाले हानिकारक उत्सर्जन एवं लीचेट को कम करने के साथ-साथ लैंडफिल स्थलों को हरित क्षेत्र एवं पार्कों में विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होती है। कार्यक्रम में करीब 30 शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। सभी प्रतिभागियों ने सिंगल-यूज प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सतत एवं जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने का संकल्प लिया।

टीएलएम किट की गुणवत्ता जांच के बाद ही ... के

अमर उजाला 28/06/2026

किसानों को जागरूक किया

कानपुर। खेत बचाओ अभियान के तहत चौबेपुर के निगोहा गांव में किसानों को जागरूक किया गया। बताया गया कि खेती में अंधाधुंध रासायनिक खादों के प्रयोग से मिट्टी और मानव सेहत दोनों पर बुरा असर पड़ रहा है। कार्यक्रम का आयोजन चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के दलीपनगर कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से किया गया। केंद्र के विज्ञानी डॉ. शशिकांत ने किसानों को बताया कि मृदा में जीवांश पदार्थ मिलने से मृदा में सुधार होगा। इसके लिए ढैंचा, सनई, उड़द एवं मूंग की फसल के अवशेषों को उसी खेत में मिला दें। उद्यान विज्ञानी डॉ. अरुण कुमार सिंह ने कहा कि गर्मी में जुताई करने से खेत में कीट पतंगों एवं खरपतवारों की संख्या काफी कमी हो जाती है। (ब्यूरो)

सीएसए में अपशिष्ट प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल के निर्देश एवं कुलपति डॉ संजीव गुप्ता के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान बिभाग द्वारा 'अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. रश्मि सिंह, प्रभारी, संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग ने किया। उनके साथ विभाग की टीचिंग एसोसिएट सुश्री एलेना ताखेल्लाम्बम एवं डॉ. स्वप्निल सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए दैनिक जीवन में सतत् अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु सतत् अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देना था। वक्ताओं ने बताया कि सिंगल-यूज़ प्लास्टिक जैव-अवक्रमणीय नहीं होती, जिसके कारण यह मानव स्वास्थ्य, वन्यजीवों तथा पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती है। यह भूमि, जल एवं मृदा प्रदूषण का प्रमुख कारण बनती है। प्रतिभागियों को प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए एकल-उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग घटाने, पुनः उपयोग योग्य एवं पर्यावरण-अनुकूल विकल्प अपनाने, स्रोत स्तर पर कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) तथा अपशिष्ट के वैज्ञानिक एवं जिम्मेदार निस्तारण के उपायों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में 'लैंडफिल के लिए पार्कों का विकास - एक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण' विषय पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान प्रतिभागियों को क्ले कैपिंग तथा फाइटोकैपिंग जैसी लैंडफिल कैपिंग तकनीकों से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि फाइटोकैपिंग, जिसमें वनस्पतियों एवं प्राकृतिक मृदा प्रणाली का उपयोग कर लैंडफिल को ढका जाता है, पारंपरिक क्ले कैपिंग की तुलना में अधिक टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल एवं किफायती तकनीक है।

सीएसए में तैयार किया जाएगा भारतीय कृषि ज्ञान प्रणाली केंद्र

पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर शोध, प्रशिक्षण और तकनीकी प्रदर्शन को मिलेगा बढ़ावा, बोर्ड बैठक में प्रस्ताव मंजूर

जागरण संवाददाता, कानपुर : चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में भारतीय कृषि ज्ञान प्रणाली (आइकेएस) केंद्र स्थापित किया जाएगा। कुलपति डा. संजीव गुप्ता की अध्यक्षता में शनिवार को हुई बोर्ड आफ मैनेजमेंट (बीओएम) की बैठक में प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। केंद्र की स्थापना के बाद विश्वविद्यालय में पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर शोध, प्रशिक्षण और तकनीकी प्रदर्शन को बढ़ावा मिलेगा। केंद्र का प्रस्ताव तैयार करने के लिए कमेटी का गठन भी किया जाएगा जो पूरी गाइडलाइन तैयार करेगी।

विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार केंद्र के माध्यम से कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित नई किस्मों और तकनीकों का खेतों पर परीक्षण किया जाएगा। इसके अलावा किसानों, ग्रामीण युवाओं और कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं को उन्नत फसल उत्पादन, पशुपालन, जैविक खेती और जैविक कृषि तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। किसानों को मिट्टी की जांच, उर्वरक प्रबंधन और उच्च गुणवत्ता वाले बीज एवं पौधे भी उपलब्ध कराए जाएंगे। केंद्र में जैविक खेती, मिश्रित खेती, फसल चक्र और जल संरक्षण जैसी तकनीकों पर शोध कार्य कराया जाएगा। साथ ही गोबर, गोमूत्र, नीम और अन्य जैविक तत्वों से तैयार पारंपरिक कीटनाशकों की प्रभावशीलता का अध्ययन भी होगा। विश्वविद्यालय परिसर में माडल फार्म विकसित कर आधुनिक और पारंपरिक खेती की लागत एवं उत्पादन की तुलना भी की जाएगी। इसके अलावा बैठक में दस गांवों के एक हजार किसानों को जैविक खेती के लिए प्रशिक्षित करने के पायलेट प्रोजेक्ट को भी मंजूरी दी गई है। इसके अलावा तीन दर्जन से अधिक प्रस्तावों पर मंजूरी प्रदान की गई है।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 17 अंक : 352 कानपुर, रविवार 28 जून 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

अपशिष्ट प्रबंधन पर हुआ जागरूकता कार्यक्रम

कानपुर। विवि के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान बिभाग ने अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ। कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. रश्मि सिंह प्रभारी संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग और टीचिंग एसोसिएट एलेना ताखेल्लाम्बम एवं डॉ. स्वप्निल सिंह ने प्रतिभागियों से दैनिक जीवन में सतत् अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने के महत्व पर जानकारी दी। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा पर्यावरण संरक्षण पर अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देना था। सिंगल-यूज़ प्लास्टिक जैव-अवक्रमणीय नहीं होती, जिसके कारण यह मानव स्वास्थ्य, वन्यजीवों तथा पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती है। यह भूमि, जल एवं मृदा प्रदूषण का प्रमुख कारण बनती है। प्रतिभागियों को प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए एकल-उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग घटाने, पुनः उपयोग योग्य एवं पर्यावरण-अनुकूल विकल्प अपनाने, स्रोत स्तर पर कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) तथा अपशिष्ट के वैज्ञानिक एवं जिम्मेदार निस्तारण के उपायों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में लैंडफिल के लिए पार्कों का विकास एक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण पर चर्चा की गई। इस दौरान प्रतिभागियों को क्ले कैपिंग तथा फाइटोकैपिंग जैसी लैंडफिल कैपिंग तकनीकों से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि फाइटोकैपिंग, जिसमें वनस्पतियों एवं प्राकृतिक मृदा प्रणाली का उपयोग कर लैंडफिल को ढका जाता है, पारंपरिक क्ले कैपिंग की तुलना में अधिक टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल एवं किफायती तकनीक है। यह लैंडफिल से निकलने वाले हानिकारक उत्सर्जन एवं लीचेट को कम करने के साथ-साथ लैंडफिल स्थलों को हरित क्षेत्र एवं पार्कों में विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होती है। कार्यक्रम में करीब 30 शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। सभी प्रतिभागियों ने सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सतत् एवं जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने का संकल्प लिया।

दैनिक
आज का कानपुर
पुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौदहा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित
acebook aajkakanpur aajkakanpur 83033 31758 aajkakanpur@gmail.com aajkakanpur20

त पक्षी हॉर्नबिल ... धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे

हरी खाद अपनाकर मिट्टी की सेहत सुधारें, रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग करें : डॉ. शशिकांत

कानपुर, संवाददाता। हरी खाद के उपयोग और रासायनिक उर्वरकों के संतुलित प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता बढ़ाई जा सकती है, जिससे खेतों की सेहत के साथ किसानों की आय में भी सुधार होगा। गर्मी के मौसम में ढैंचा, सनई, उड़द और मूंग जैसी हरी खाद वाली फसलों के अवशेष खेत में मिलाना लाभदायक है। यह बातें शनिवार को कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने चौबेपुर विकासखंड के ग्राम निगोहा में आयोजित खेत बचाओ अभियान के दौरान कहीं।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर की ओर से खेत बचाओ अभियान के तहत ग्राम निगोहा में किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में किसानों को मृदा संरक्षण, जैविक पदार्थों के महत्व और टिकाऊ खेती के तरीकों की जानकारी दी गई।डॉ. शशिकांत ने बताया कि मृदा में जीवांश पदार्थ बढ़ने से उसकी गुणवत्ता में सुधार होता है, जबकि रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से मिट्टी और मानव स्वास्थ्य दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने किसानों से हरी खाद को खेती का नियमित हिस्सा बनाने की अपील की।उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने कहा कि गर्मी के मौसम में गहरी जुताई करने से खेतों में कीट-पतंगों और खरपतवारों की संख्या कम होती है, जिससे अगली फसल के लिए बेहतर वातावरण तैयार होता है और उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलती है।कार्यक्रम में ग्राम निगोहा के सैकड़ों किसानों ने भाग लेकर मृदा संरक्षण और आधुनिक कृषि तकनीकों से जुड़ी जानकारी प्राप्त की।

रहस्य संदेश

पृष्ठ : 4 मूल्य : 2.00 रुपये मात्र | एटा कासगंज अलीगढ़ लखनऊ गाजि

28 : 06 : 2026 | वर्ष 20 अंक 168 | RNI-No. UP

सीएसए में अपशिष्ट प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

रहस्य संदेश | अनवर अशरफ

कानपुर उत्तर प्रदेश की मा.राज्यपाल महोदया के निर्देश एवं कुलपति डॉ संजीव गुप्ता के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान बिभाग द्वारा "अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. रश्मि सिंह, प्रभारी, संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग ने किया। उनके साथ विभाग की टीचिंग एसोसिएट सुश्री एलेना ताखेल्लाम्बम एवं डॉ. स्वप्निल सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए दैनिक जीवन में सतत् अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु सतत् अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देना था। वक्ताओं ने बताया कि सिंगल-यूज़ प्लास्टिक जैव-अवक्रमणीय नहीं होती, जिसके कारण यह मानव स्वास्थ्य, वन्यजीवों तथा पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती है। यह भूमि, जल एवं मृदा प्रदूषण का प्रमुख कारण बनती है। प्रतिभागियों को प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए एकल-उपयोग

उपयोग योग्य एवं पर्यावरण-अनुकूल विकल्प अपनाने, स्रोत स्तर पर कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) तथा अपशिष्ट के वैज्ञानिक एवं जिम्मेदार निस्तारण के उपायों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में "लैंडफिल के लिए पार्कों का विकास – एक पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण" विषय पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान प्रतिभागियों को क्ले कैपिंग तथा फाइटोकैपिंग जैसी लैंडफिल कैपिंग तकनीकों से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि फाइटोकैपिंग, जिसमें वनस्पतियों एवं प्राकृतिक मृदा प्रणाली का उपयोग कर लैंडफिल को ढका जाता है, पारंपरिक क्ले कैपिंग की तुलना में अधिक टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल एवं किफायती तकनीक है। यह लैंडफिल से निकलने वाले हानिकारक उत्सर्जन एवं लीचेट को कम करने के साथ-साथ लैंडफिल स्थलों को हरित क्षेत्र एवं पार्कों में विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होती है। कार्यक्रम में करीब 30 शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। सभी प्रतिभागियों ने सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सतत् एवं जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने

सीएसए में जैविक खेती पर शोध, लैब से खेत तक अध्ययन

- एमएससी और पीएचडी के एक-एक छात्र ने शुरू किया रिसर्च वर्क
- सस्य विज्ञान विभाग के डा. उमानाथ शुक्ला के निर्देशन किया जा रहा शोध

श्रवण कुमार व ओजस्वी सिंह • सौजन्य

जागरण संवाददाता, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में जैविक खेती पर शोध किया जा रहा है। एमएससी प्रथम वर्ष के छात्र ओजस्वी सिंह एक साल या इस पर शोध करेंगे, जबकि पीएचडी प्रथम वर्ष के छात्र श्रवण कुमार दो साल तक इस विषय पर विस्तृत शोध करेंगे। ये दोनों छात्र अब प्रयोगशाला से लेकर खेतों तक इस बात का बारीकी से अध्ययन करेंगे कि बिना खाद और कीटनाशकों के किस तरह फसल की गुणवत्ता और पैदावार को बढ़ाया जा सकता है। इस समय सीएसए के फील्ड पर जैविक खेती के हर एक पहलू को गहराई से जानेंगे और उसके वैज्ञानिक प्रमाण जुटाएंगे।

प्रदेश में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सीएसए ने यह पहल की है। बता दें कि अब तक पारंपरिक खेती और रसायनों के इस्तेमाल पर ही शोध होते रहे हैं, लेकिन यह पहली बार है जब विश्वविद्यालय स्तर पर विशुद्ध प्राकृतिक तरीकों से भरपूर फसल लेने के विज्ञान पर व्यवस्थित शोध शुरू हुई है। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप शुरू हुए इस अनोखे कदम से आने वाले समय में कृषि क्षेत्र को एक नई दिशा मिलने वाली है।

शोध में प्राकृतिक खेती की विशेष बढ़त रिसर्च कार्य सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डा. उमानाथ शुक्ला के सीधे निर्देशन में चलाया जा रहा है। डा. उमानाथ शुक्ला ने बताया कि शोध के जरिये छात्र मुख्य रूप से यह जानेंगे कि बिना रसायनों के जमीन की उर्वरा शक्ति को कैसे वापस लौटाया जाए और कम से कम लागत में किसान को अधिक से अधिक उत्पादन कैसे मिले। उन्होंने कहा कि छात्र इस पूरी प्रक्रिया को खुद खेतों में करके सीख रहे हैं और इस शोध से जो भी वैज्ञानिक निष्कर्ष निकलेंगे, उन्हें सीधे तौर पर किसानों के बीच ले जाया जाएगा ताकि वे इसे आसानी से अपने खेतों में अपना सकें।

> हमारा किसान लागत के बोझ से मुक्त होकर पूरी तरह आत्मनिर्भर बने और देश की जनता को जहर मुक्त, शुद्ध अन्न मिले। विश्वविद्यालय में शुरू हुई यह विशेष शोध न केवल हमारे छात्रों को प्राकृतिक खेती की बारीकियों से रूबरू कराएगी, बल्कि आने वाले समय में कृषि के तौर-तरीकों को पूरी तरह बदलने में मदद करेगा। हम इस शोध के नतीजों को सीधे खेतों तक पहुंचाएंगे।
>
> – डा. संजीव गुप्ता, कुलपति, सीएसए

मुख्यमंत्री का भी प्राकृतिक खेती पर जोर

सीएसए विश्वविद्यालय परिसर में प्राकृतिक खेती को लेकर 18 जून को कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने शिरकत की थी और प्राकृतिक खेती करने वाले प्रगतिशील किसानों से सीधा संवाद किया था। मुख्यमंत्री ने तब वैज्ञानिकों और किसानों दोनों से आह्वान किया था कि धरती की सेहत बचाने के लिए अब प्राकृतिक खेती का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मुख्यमंत्री के उसी संकल्प को आगे बढ़ाते हुए अब सीएसए के सस्य विज्ञान विभाग ने इस पर शोध शुरू कर दी है।

सीएसए में अपशिष्ट प्रबंधन की दी जानकारी

जागरण संवाददाता, कानपुर : चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में शनिवार को अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति डा. संजीव गुप्ता के मार्गदर्शन में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग की ओर से कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें शिक्षकों, विद्यार्थियों और कर्मचारियों को सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्प्रभाव और सतत अपशिष्ट प्रबंधन के महत्व की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का नेतृत्व विभाग की प्रभारी डा. रश्मि सिंह ने किया।